IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 2, March 2026
Impact Factor: 8.2

स्वयं सहायता समूहों का महिलाओं की सामाजिक प्रतिष्ठा पर प्रभाव : लैंगिक समानता के विशेष संदर्भ में

डॉ शारदा सोनी

सहा प्राध्यापक (समाजशास्त्र)

शासकीय महाविद्यालयरैगाँव, सतना(म.प्र.)

सारांश

भारतीय समाज में महिलाओं की सामाजिक स्थिति ऐतिहासिक रूप से पितृसत्तात्मक संरचना से प्रभावित रही है, जिसके कारण निर्णय-निर्माण, संसाधनों पर नियंत्रण और सार्वजनिक जीवन में उनकी भागीदारी सीमित रही। स्वयं सहायता समूह (Self Help Groups–SHGs) ने इस स्थिति में परिवर्तन लाने का एक प्रभावी माध्यम प्रदान किया है। सामूहिक बचत, लघु ऋण, प्रशिक्षण, जागरूकता और सामाजिक सहभागिता के माध्यम से SHG महिलाओं की आर्थिक आत्मनिर्भरता के साथ-साथ उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा और लैंगिक समानता को भी सुदृढ़ करते हैं। प्रस्तुत शोध आलेख में SHG के माध्यम से महिलाओं की सामाजिक पहचान, पारिवारिक निर्णय क्षमता, सार्वजनिक सहभागिता और सामाजिक व्यवहार में आए परिवर्तन का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि SHG महिलाओं को आश्रित भूमिका से सक्रिय सामाजिक नागरिक में परिवर्तित करता है, हालांकि सामाजिक मानसिकता, शिक्षा और संरचनात्मक बाधाएँ इस परिवर्तन की गति को प्रभावित करती हैं।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in

DOI: 10.48175/568